# CONTENTS

## INDEX


| TITLE | Page(s) |
|---|---|
| **RURAL DEVELOPMENT AND EMPLOYMENT THROUGH SKILL DEVELOPMENT.**<br>***Dr. Saurav Kumar , **Vir Pratap** | **02** |
| **ONLINE MARKETING A BOOMING BUSINESS TECHNIQUE, WITH CHALLENGES.**<br>***Dr. Prashant Sharma** | **18** |
| सैनिक, व्यापारिक एवं कृषक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थीयों की राष्ट्रीयता की संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन<br>* डॉ0 शिवपाल सिंह , **सोविन्द्र वर्मा | **25** |
| **ACHIEVING NEW PARADIGMS IN ENTREPRENEURIAL SKILLS AND MINDSETS - SERIAL ENTREPRENEURSHIP!!! - THE MIDAS TOUCH IN SUCCESSFUL ENTREPRENEURS.**<br>***Ms. Anju Arora, **Dr. S.C. Varshney** | **33** |
| **DISRUPTIVE INNOVATIONS IN HIGHER EDUCATION: A CASE STUDY OF XYZ GROUP OF INSTITUTIONS.**<br>***Dr. Parul Saxena , **Dr. Priti Verma** | **42** |


DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

DVS International Journal of Multi-Disciplinary Research
ISSUE: 06, Vol: 2, No.2 October - December, 2016
ISSN NO 2454-7522

# सैनिक, व्यापारिक एवं कृषक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थियों की राष्ट्रीयता की संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन

*डॉ0 शिवपाल सिंह
प्राचार्य,
दीवान इंस्टीटयूट ऑफ मैनेजमेंट ऑफ स्टडीज, मेरठ
**सोविन्द्र वर्मा
(एम0फिल0शिक्षाशास्त्र)
स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ

## सारांश

प्रत्येक राष्ट्र के नागरिकों का यह पूर्ण कत्तव्र्य होता है कि वह अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठावान तथा राष्ट्र के विकास के कार्यो में अपने दायित्व के साथ पूर्ण सहयोग की भावना सें ओत–प्रोत हो, ओर राष्ट्र के प्रति हम सेवा की भावना हो। किसी भी राष्ट्र में निवास करने वाला नागरिक राष्ट्र की धरोहर होता है। उसके कन्धों पर पूर्ण दायित्व दिया जाता है। वह अपने संस्कारों, सस्कृति को सुरिक्षत रखें, अपनी आने वाली नवीन पढी को हस्तान्तरण करे। राष्ट्र को सर्वोपरि रखना ही राष्ट्रीयता कहलाती है तथा राष्ट्र को किसी भी प्रकार की क्षति होने पर कष्ट की अनुभूति होना तथा विकसीत होने पर प्रसन्नता की अनुभूति होना, राष्ट्रीय संवेदना कहलाती है। प्रत्येक राष्ट्र के अर्न्तगत विभिन्न जाति, धर्म व व्यवसाय के लोग निवास करतें हैं। सबकी प्रवृत्ति विचार अलग–अलग हो सकते है, लेकिन राष्ट्रीयता संवेदना की स्थिति एक समान पायी जानी चाहिये जिससें इनके बालकों की राष्ट्रीयता के संवेदना एकसमान होनी चाहिये जोकि भावी पीढी आने वाली है। राष्ट्र का विकास सम्भवतः अगर विभिन्न व्यवसाय वाले परिवार की राष्ट्रीय संवेदना की स्थिति एक समान नही है तो यह राष्ट्र के लिये चिन्तन का विषय है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुये अध्ययनकर्ता ने विभिन्न व्यवसाय, सैनिक एवम कृषक के परिवारों का रहन सहन का प्रभाव भारत में निवास करने वाले लोगो व स्नातक स्तर विद्यार्थियों की राष्ट्रीयता की संवेदना का कितना दृष्टिगोचर होता है।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

## प्रस्तावना

समाज का लघु रूप परिवार कहा गया है परिवार के ही द्वारा समाज का निर्माण होता है। जैसे–जैसे परिवार विकसित होते जाते है वैसे वैसे समाज होता जाता है। परिवार की सबसे छोटी इकाई बालक है, बालक की शिक्षा से ही प्रारम्भ हो जाती है। जैसे–जैसे माँ खान–पान रहन सहन व व्यवहार व चरित्र का प्रभाव गर्भ में पल रहे बालक पर पड़ता है। वैसे ही जब बालक जन्म के बाद बड़ा होता है तब वह परिवार के अन्य सदस्यों व्यवहार से प्रभावित हेाता है। और उसके व्यवहार में परिवर्तन आने लगता है। हमारा देश कई एक धर्म संस्कृति का संगम है। हमारे देश में कई एक प्रकार के परिवार पायें जाते है। उन परिवारों को उनके कार्य से जाना जाता है। कोई सेना में है तो सैनिक परिवार कोई व्यवसाय से जुड़ा है। तो व्यवसायिक परिवार तथा तो कृषि करता है। तो वह कृषक परिवार के नाम सें जाना जाता है। जैसे जैसे जिस परिवार के मुखिया का जो व्यवसाय है। उसके अनुरूप उसका व्यवहार से प्रभावित होने लगता है। और बालक का व्यवहार प्रभावित हो जाता है। सैनिक परिवार के बालक की संवेदनायें देश के प्रति कैसी है। और व्यापारिक एवं कृषक परिवार की एक समान सवेंदनायें है इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये आने वाली भावी पीढी का विकास राष्ट्र के प्रति सवेंदनशील होगा। यदि विभिन्न व्यवसाय के बालको की संवेंदना राष्ट्र के प्रति समान नहीं है। तो यह एक चिन्तनीय विषय है। जिसके कारण राष्ट्र की क्षति का भय बना रहेंगा। शोधकर्ता नें इस तथ्य को ध्यान में रखतें हुये सैनिक व्यापारिक एवं कृषक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थियों को राष्ट्रीयता की संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन किया।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

## इस शोध कार्य के लिये पूर्व में किये गये इस शोध से सम्बन्धित निम्नलिखित साहित्यों का अध्ययन किया गया।

ओवेल एवं रिचर्ड (2000) ग्रीन और वीनस (2001) पाण्डेय आर0 और त्रिपाठी ए0एन0 (2004) जियांग और एस0जी0आई0 (2005) गिल्वर्ट और केविन पॉल (2006) प्रसाद एस0एन0 (2007) चन्द्रकान्त पण्डित (2007) डा0 मन्जुला (2007) चानावती (2008) राजेश्वरी (2008) इस सभी अनुसंधान कर्ताओं द्वारा यह निष्कर्ष निकला है। कि भारत एक बहुधर्मीय बहुजातीय एवं बहुसंस्कृति वाला राष्ट्र है। जोकि भारत में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है। अपने धर्म संस्कृति व

राष्ट्र को प्रेम न करता हो और राष्ट्र के प्रति संवेदनशील न हो लेकिन उस व्यक्ति की व्यवसाय उसके सोच को किस तरह से प्रभावित करती है। यह जाँचनें का विषय है।

## अध्ययन की आवश्यकता

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह प्रश्न उठता है कि अगर समाज में परिवारिक व्यवसाय का प्रभाव उनके रहन–सहन खान–पान पर पडता है तो परिवारिक विचारों का प्रभाव परिवार के सदस्यों पर अवश्य पड़ता होगा। यह सर्व विदित है कि परिवार वालों के विचारों का प्रभाव बालकों पर पड़ता है वैसे ही शिक्षा का व शिक्षकों के विचार का प्रभाव किस प्रकार का दृष्टिकोण उत्पन्न करता है यह जाँच का विषय है। परिवार से बड़ा गाँव, गाँव से बड़ा जनपद, जनपद से बड़ा राज्य और राज्य से बड़ा देश है। देश के प्रत्येक नागरिकों में अपने राष्ट्र के प्रति कुर्बान होने का जज्बा उत्पन्न करना प्रत्येक नागरिक का मानवीय कर्त्तव्य है। क्या परिवार के व्यवसाय के अनुसार राष्ट्रीयता की सवेंदना विकसित हो रही है। यह जाँच किया जाना नितान्त है आवश्यकता ही नहीं अनिवार्य है। इस बात को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्त्ता ने प्रस्तुत समस्या का चयन किया है।

## अध्ययन की समस्या

सैनिक, व्यापारिक एवं कृषक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थीयों की राष्ट्रीयता की संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

## अध्ययन के उद्देश्य

1. सैनिक एवं व्यापारिक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थीयों के राष्ट्रीयता की संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन।
2. सैनिक एवं कृषक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थीयों के राष्ट्रीयता की संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन।
3. व्यापारिक एवं कृषक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थीयों के राष्ट्रीयता की संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन।

## शोध परिकल्पनायें

1. सैनिक एवं व्यापारिक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थीयों की राष्ट्रीयता की संवेदना में सार्थक अन्तर नही है।
2. सैनिक एवं कृषक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थीयों की राष्ट्रीयता की संवेदना में सार्थक अन्तर नही है।
3. व्यापारिक एवं कृषक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थीयों की राष्ट्रीयता की संवेदना में सार्थक अन्तर नही है।

## शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन को पूर्ण करने के लिए सर्वेक्षण की विश्लेषणात्मकता विधि के चरणों का अनुसाण किया गया है।

## शोध अभिकल्प

इस अध्ययन को पूर्ण करने हेतु एकल स्थायी समूह अभिकल्प की प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है।

## जनसंख्या/न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में मेरठ जनपद के सैनिक, व्यापारिक एवं कृषक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थीयों को इस अध्ययन की जनसंख्या मानते हुए 300 विद्यार्थीयों को याद्वच्छिक न्यादर्श विधि से चयनित किया गया जिसमे 100 सैनिक, 100 व्यापारिक एवं 100 कृषक परिवार के विद्यार्थीयों को उद्देश्य पूर्ण न्यादर्श से चयनित कर 300 विद्यार्थीयों को चयन कर यह अध्ययन को पूर्ण किया गया है।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

## सैनिक एवं व्यापारिक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थीयों की राष्ट्रीयता की संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन

सारणी संख्या–1

| परिवार की प्रकृति | सदस्यों की संख्या | औसत माध्यमान | प्रमाणिक विचलन | Z प्राप्तांक | संवेदना का स्तर | प्रमाणिक विचलन तृष्टि | t प्राप्तांक | सार्थकता का स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सैनिक परिवार | 100 | 104 | 11.99 | +0.06 | सामान्य स्तर | 1.31 | 6.87 | सार्थक अन्तर है |
| व्यापारिक परिवार | 100 | 113 | 6.90 | +0.50 | सामान्य स्तर से ऊपर | | | |

उपरोक्त सारणी के माध्यम से सैनिक एवं व्यापारिक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थियों की राष्ट्रीयता की संवेदना का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए अन्तर की सार्थकता ज्ञात की गई जिसमें सैनिक एवं व्यापारिक परिवार के 100–100 स्नातक स्तर विद्यार्थियों को राष्ट्रीयता की संवेदना की मापनी के द्वारा औसत मान प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया जो क्रमशः 104, 1.99 व 113, 6.90 प्राप्त हुआ जो **Z** प्राप्तांक +0.06 व 0.50 प्राप्त हुआ जो उपकरण परिणाम सारणी के अनुसार सैनिक परिवार का सामान्य स्तर व्यापारिक परिवार का सामान्य स्तर से ऊपर दर्शाता है। जिसके आधार पर **t** प्राप्तांक ज्ञात किया गया जो 6.87 प्राप्त हुआ। जो स्वतन्त्रता अंश 98 सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.63 से 6.87 ज्यादा है। अतः परिकल्पना संख्या 1 को निरस्त करते हुए अध्ययनकर्ता 99 प्रतिशत विश्वास के साथ कह सकता है कि सैनिक एवं व्यापारिक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थियों की राष्ट्रीयता की संवेदना के मध्य सार्थक अन्तर है सैनिक परिवार की व्यापारिक परिवार सें राष्ट्रीयता की संवेदना अच्छी है।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

**सैनिक एवं कृषक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थियों की राष्ट्रीयता की संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन**

**सारणी संख्या–2**

| परिवार की प्रकृति | सदस्यों की संख्या | औसत माध्यमान | प्रमाणिक विचलन | Z प्राप्तांक | संवेदना का स्तर | प्रमाणिक विचलन तृष्टि | t प्राप्तांक | सार्थकता का स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सैनिक परिवार | 100 | 104 | 11.19 | +0.06 | सामान्य स्तर | 1.75 | 2.85 | सार्थक अन्तर है |
| कृषक परिवार | 100 | 109 | 13.55 | +0.30 | सामान्य स्तर | | | |

उपरोक्त सारणी के माध्यम से सैनिक एवं कृषक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थियों की राष्ट्रीयता की संवेदना का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए अन्तर की सार्थकता ज्ञात की गई जिसमें सैनिक एवं कृषक परिवार के 100–100 स्नातक स्तर विद्यार्थियों को राष्ट्रीयता की संवेदना की मापनी के द्वारा औसत मान प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया जो क्रमशः 104, 11.19 व 109, 13.55 प्राप्त हुआ जो Z प्राप्तांक +0.06 व 0.30 प्राप्त हुआ जो उपकरण परिणाम सारणी के अनुसार सैनिक परिवार व कृषक परिवार के सामान्य स्तर को दर्शाता है। जिसके आधार पर t प्राप्तांक ज्ञात किया गया जो 2.85 प्राप्त हुआ। जो स्वतन्त्रता अंश 98 सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.63 से 2.85 ज्यादा है। अतः परिकल्पना संख्या 2 को निरस्त करते हुए अध्ययनकर्ता 99 प्रतिशत विश्वास के साथ कह सकता है कि सैनिक एवं कृषक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थियों की राष्ट्रीयता की संवेदना के मध्य सार्थक अन्तर है सैनिक परिवार से कृषक परिवार की राष्ट्रीयता की संवेदना अच्छी है।

**व्यापारिक एवं कृषक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थीयों की राष्ट्रीयता की संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन**

सारणी संख्या–3

| परिवार की प्रकृति | सदस्यों की संख्या | औसत माध्यमान | प्रमाणिक विचलन | Z प्राप्तांक | संवेदना का स्तर | प्रमाणिक विचलन तृष्टि | t प्राप्तांक | सार्थकता का स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| व्यापारिक परिवार | 100 | 113 | 6.90 | +0.50 | सामान्य स्तर | 1.51 | 2.64 | सार्थक अन्तर है |
| कृषक परिवार | 100 | 109 | 13.55 | +0.30 | सामान्य स्तर | | | |

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

उपरोक्त सारणी के माध्यम से व्यापारिक एवं कृषक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थियों की राष्ट्रीयता की संवेदना का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए अन्तर की सार्थकता ज्ञात की गई जिसमें व्यापारिक एवं कृषक परिवार के 100–100 स्नातक स्तर विद्यार्थियों को राष्ट्रीयता की संवेदना की मापनी के द्वारा औसत मान प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया जो क्रमशः 113, 6.90 व 109, 13.55 प्राप्त हुआ जो Z प्राप्तांक +0.50 व 0.30 प्राप्त हुआ जो उपकरण परिणाम सारणी के अनुसार व्यापारिक परिवार व कृषक परिवार के सामान्य स्तर को दर्शाता है। जिसके आधार पर t प्राप्तांक ज्ञात किया गया जो 2.64 प्राप्त हुआ। जो स्वतन्त्रता अंश 98

सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.63 से ज्यादा है। अतः परिकल्पना संख्या 3 को निरस्त करते हुए अध्ययनकर्ता 99 प्रतिशत विश्वास के साथ कह सकता है कि व्यापारिक एवं कृषक परिवार के स्नातक स्तर विद्यार्थियों की राष्ट्रीयता की संवेदना के मध्य सार्थक अन्तर है व्यापारिक परिवार से कृषक परिवार की राष्ट्रीयता की संवेदना अच्छी है।

## निष्कर्ष/परिणाम

**उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह प्रश्न उठता है। कि निष्कर्ष/परिणाम**

उपरोक्त परिकल्पनों के मद्देनजर किये गये विश्लेषण के आधार पर अगर वर्तमान परिवारों के स्नातक स्तर के बच्चों के बच्चों को राष्ट्रीयता निवेदना के प्रति विचारों को निकल गयें परिणाम सबसे निम्न व्यापारिक परिवार का उससे ऊपर परिवार कर सबसे ऊपर कृषक परिवार का पाया गया है जिससें यह स्पष्ट होता है। कि सैनिक परिवार कृषक परिवार के स्नातक स्तर के बच्चों का राष्ट्रीयता की सवेंदना के प्रति अट्टू लगाव है। सबसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति इस परिणाम से व्यापारिक परिवारों के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के राष्ट्रीयता की सवेंदना के प्रति दृष्टिकोण स्तर जो निम्न पाया गया है। जो कि चिन्ता का विषय है इस सम्बन्ध में सभी शिक्षाविद् एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं व प्रबन्धन विद्यालियों महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों के पाठयक्रम में राष्ट्रीयता की सवेंदना सम्मिलित किया जायें। जिससें बालकों में जागरूकता होने की अति आवश्यक है। जो कि है वह राष्ट्रीयता की संवेदना के प्रति विश्वास नहीं कर रहें है।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- शुक्ला के० के०, परिवार, ए०जे०एस० एवं के०पी० (2011) शिक्षा के दार्शनिक तथा समाज शास्त्रीय आधार मेरठः आर०लाल बुक डिपो।

2- गुप्ता एस०पी० एवं गुप्ता अलका, (2010) साँख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।

3- सुलैमान, मुहम्मद (2009), मनोविज्ञान शिक्षा एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी।

4- रूहेला, एव०पी० (2005) विकासोन्युख भारतीय समाज में शिक्षण और शिक्षा, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।

5- पाण्डेय, सामशक्ल, (2007), शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त, आगरा–7, अग्रवाल पब्लिकेशन।

6- शर्मा आर०ए० (2006), भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास, मेरठ : आर लाल बुक डिपो।

7- मंगल, एस०के० एवं मंगल शुभ्रा (2006) शैक्षिक तकनीकी के मूलतत्व एवं प्रबन्ध मेरठ : लॉयल बुक डिपो।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522